प्रातः क्लास 15-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह तो बच्चे जानते हैं हम आत्मा हैं न कि शरीर। इनको कहा जाताहै देहीअभिमानी। मनुष्य सभी हैं देह-अभिमानी। यह है ही पापात्माओं की दुनिया अथवा विकारी दुनिया। रावण राज्य। सतयुग पास्ट हो गया है वहां सभी निर्विकारी रहते थे। बच्चे जानते हैं हम भी पवित्र निर्विकारी देवतारं थे जो 84जन्मों बाद आकर पतित बने हैं। सभी तो 84 जन्म नहींलेते हैं। भारतवासी ही देवी देवतारं थे। जिन्होंने 84-83 अथवा 82 लिये। वही पतित बने हैं। भारत की ही बात है। चीन वा अमेरीका वाले तो देवी देवता नहीं थे। भारत ही अविनाशी खण्ड गाया हुआ है। जब भारत में इन ल०ना० का राज्य था तो इसको नई दुनिया नया भारत कहा जाता था। अभी है पुरानी दुनिया पुराना भारत। वह सम्पूर्ण निर्विकारी थे। कोई विकार न था। वही देवतारं 84 जन्म ले अभी पतित बने हैं। पतित मनुष्यों को कहा जाता है कामी कुला। कोई एक स्त्री होते दूसरी करता है तो कहा जाता है यह तो कामी कुला है। रात-दिन विकार में ही फंसा हुआ है। काम कामूत क्रोध का भूत। लोभ मोह का भूत। यहसभी कड़े भूत हैं। इनमें मुख्य है देह-अभिमान का भूत। रावण राज्य है ना। यह रावण है भारत का आधा कल्प का दुश्मन। मनुष्य में 5विकार प्रवेश करते हैं। इन देवताओं में यह भूत नहीं थे। फिर पुनर्जन्म लेते2इन्हों की आत्मा में भी विकार आगई। तुम जानते हो जब हम देवतारं थे तो कोई भी विकार का भूत नहीं था। सतयुग त्रेता को ही कहा जाता है राम-राज्य। द्वापर कलियुग को कहा जाता है रावण-राज्य। 5विकार स्त्री में, 5विकार पुरुष में हैं। विष्णु को 4भुजा दिखाते हैं, अर्थात दो भुजा स्त्री की, दो भुजा पुरुष के। दोनो को मिलाकर चतुर्भुज विष्णु को कहा जाता है। यहां हरेक नर -नारी में 5विकारहै। द्वापर से कलियुग तक रावण राज्य चलता है। अभी तुमपुरुषोत्तम संगम युग पर बैठे हो। बेहद के बाप के पास आये हो विकारी से निर्विकारी बनने लिये। निर्विकारी बन फिर और कोई विकार में गिरते हैं तो बाबा लिखते हैं तुमने काला मुंह कर दिया फिर गोरा मुंह होना मुश्किल है। 5मार से गिरने से हड्डी- गुड्डी टूट जाती है। गीता में भी भगवानुवाच है ना काम महाशत्रु है। भारत का वास्तव में धर्म-शास्त्र है ही एक गीता। हरेक धर्म का एकशास्त्र ही है। भारतवासियों के तो ढेर शास्त्र हैं। इनको कहा जाता है भक्ति। आधा कल्प भक्ति चलती है। सीढ़ी नीचे ही उतरते जाते हैं। दुनिया पुरानी तमोप्रधान बनती है ना। नई दुनिया को कहा जाता है सतोप्रधान। गोल्डेन एज। वहां कोई लड़ाई झगड़ा आदि न था। बड़ी आयु, स्वीट= एवर हेल्दी ... तुमको स्मृति आई हम देवतारं बहुत ही सुखी थे। वहां अकाले मृत्यु होता ही नहीं। काल का डरहता ही नहीं। वहां हेल्थ वेल्थ हेपीनेस सभी होते हैं। नर्क में हेपीनेस होती ही नहीं। कुछ न कुछ शरीर का दुःख लगा ही रहता है। यह है अपार दुःखों की दुनिया। वह है अपार सुखों की दुनिया। बेहद का बाप दुःख की दुनिया थोड़ेहीरचेंगे। बाप ने तो सुख की दुनिया रची। फिर रावण राज्य आया तो उन से दुःख का सराप मिला। सतयुग है सुखधाम। कलियुग है दुःखधाम। विकार में जाना गोया एक दो पर काम कटारी चलाना है। कितनी बड़ी हिंसा है। मनुष्य कहते हैं यह तो भगवान की रचना है ना। परन्तु नहीं। भगवान की यह रचना नहीं है। यहरावण का रचना है। भगवान ने तो स्वर्ग रचा। वहां काम कटारी होती ही नहीं। ऐसे नहीं कि सुख दुःख भगवान ही देते हैं। और भगवान बेहद का बाप बच्चों को दुःख कैसे देंगे। वह तो कहते हैं मैं सुख का वरसा देता हूं। फिर आधा कल्प बाद रावण सरापतकरते हैं। सतयुग में तो अथाह सुख थे। माला माल थे। एक ही सोमनाथ के मंदिर में कितने हीरे जवाहर आदि थे। भारत कितना सालवेन्ट था। अभी तो भारत इनसालवेन्ट है। सतयुग में 100% सालवेन्ट, कलियुग में 100% इनसालवेन्ट। यहखेल बना हुआ है। अभी है आयरनएज। खाद पड़ते2 बिल्कुल ही तमोप्रधान बन गये है। कितना दुःख है। यह एरोपलेन आदि अभी 100वर्ष में बने हैं। इनको कहा जाता है माया का पाम्प। शो। मनुष्य समझते हैं गांधी ने तो स्वर्ग बना दिया। बापकहते हैं यह है आर्टीफिशीयल। रावण का स्वर्ग कहेंगे। बहुत खूब सूरती है। माया का पाम्प देख तुम्हारे पास कोई मुश्किल आते हैं। समझते हैं हमारे पास तो बड़े2 महल, मोटरें

आदि सभी कुछ हैं। हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। बाप समझाते हैं स्वर्ग सतयुग को कहा जाता है। जब इन(ल०ना) का राज्य था। अभी इनका राज्य थोड़ेही हैं। हां कलियुग के बाद फिर इनका राज्य होगा। पहले भारत बहुत छोटा था। नई दुनिया में होते ही हैं 9लाख देवतायें। बस। पीछे वृधि को पाते हैं। मनुष्य सृष्टि वृधि को पाती हरती है ना। पहले सिर्फ देवी देवतायें ही थे। तो बेहद का बाप यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी बैठसमझाते हैं। बाप बिगर औरबिगर तो और कोई बता न सके। इनको कहा जाता है नालेजफुल गाड फादर। सभी आत्माओं का फादर। आत्मायें सभी हैं भाई। फिर भाई और बहन बनते हैं। तुम सभी हो प्रजापिता ब्रह्मा के एडाप्टेड चिल्ड्रेन्स। सभी आत्मायें इनकी सन्तान तो है नहीं। उनको कहा जाता है परमपिता। उनका नाम है शिव। बस। बाप समझाते हैं मेरा नाम एक ही है शिव है। फिर भक्ति मार्ग में मनुष्यों ने तो बहुत ही मंदिर बनाये हैं। तो बहुत नाम रख दिये हैं। भक्ति की सामग्री कितनीढेर हैं। उसको पढ़ाई नहीं कहेंगे। उसमें एमआबजेक्ट कुछ भी है नहीं। भक्ति है ही नीचे उतरने की। नीचे उतरते2 तमोप्रधान बन जाते हैं। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है सभी को। तुम सतोप्रधान बनकर स्वर्ग में आवेंगे बाकी सभी सतोप्रधान बन शान्तिधाम में रहेंगे। यह अच्छी रीत याद करो। बाप ने समझाया हैतुम ने हमको बुलाया है बाबा हम पतितों को आकर पावन बनाओ। तो अब मैं सारी दुनिया को पावन बनाने आया हूं। मनुष्य समझते हैं गंगा स्नान से पावन बन जावेंगे। गंगा को पतित-पावनी समझते हैं। कुआं ऐसा पानी निकला उनको भी गंगा का पानी समझ स्नान करते हैं। गुप्त गंगा समझते हैं। तीर्थ यात्रा पर किसी पहाड़ों पर जावेंगे उसको भी गुप्त गंगा कहेंगे। भक्ति मार्ग है ही झूठ मार्ग। ज्ञान मार्ग है सत्य। गाड इज ट्रूथ कहा जाता है। बाकी रावण राज्य में सभी हैं झूठ बोलने वाले। गाड फादर ही सच्च खण्ड स्थापन करते हैं। वहां तो झू०की बात ही नहीं होती। देवताओं को भोग भी शुध लगाते हैं। अभी तो है आसुरी राज्य। सतयुग त्रेता में है ईश्वरी य राज्य। जो अभी स्थापन हो रहा है। ईश्वर आकर सभी को पावनबनाते हैं। देवताओं में कोई विकार होता ही नहीं। यथा राजा रानी तथा प्रजा सभी पवित्र होते हैं। यहां सभी हैं पापी, कामी क्रोधी। नई दुनिया को स्वर्ग, पुरानी दुनिया को नर्क कहा जाता है। नर्क को स्वर्ग बाप के सिवाय कोई बना न सके। यहां सभी हैं नर्क वासी पतित। विश से ही जन्म लेते हैं। सभी को ले जाते हैं गंगा स्नान कराने। पतित है तो तब तो जाते हैं ना। सतयुग में है पावन। वहां ऐसे नहीं कहेंगे कि हम पतित से पावन होने लियेगंगा स्नान करने जाते हैं। बाप समझाते हैं यह साधु सन्त भी पतित हैं। उन्हों का भी उधार करने हमको आना पड़ता है। कलियुग में हैं $4\frac{1}{2}$ सौ करोड़। सतयुग में होंगे 9लाख। कितना फर्क है। यह वैरायटी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। बीज रूप है भगवान। वही रचनारचते हैं। पहले2 रचते हैं देवी देवता धर्म को। फिर वृधि को पाते2 इतने धर्म हो जाते हैं। पहले एक धर्म एक राज्य था। सुख ही सुख था। मनुष्य चाहते भी हैं विश्व में शान्ति हो। वह अभी तुम स्थापन कर रहे हो। देवी देवताओं का राज्य अभी तुम फिर से स्थापन कर रहे हो। बाकी सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी थोड़े रहेंगे। यह चक्र फिरता रहता है। अभी है कलियुग अन्त सतयुग आदि का पुरुषोत्तम संगम युग। इसको कहा जाता है कल्याणकारी युग। कलियुग के बाद सतयुग स्थापन हो रहा है। तुम संगम युग पर पढ़ते हो। इसका फल फिर सतयुग में मिलेगा। ऐसी पढ़ाई तो कहां भी होती ही नहीं। तुमको इस पढ़ाई का सुख नई दुनिया में मिलेगा। यहां जितना पवित्र बनेंगे और पढ़ेंगे उतना ही ऊच्च पद पावेंगे। अगर कोई भी भूत होगा तो एक तो सज़ा खानी पड़ेगी दूसरा फिर वहां जाकर कम पद पावेंगे। जो सम्पूर्ण बन फिर औरों को भी पढ़ावेंगे तो वह ऊच्च पद भी पावेंगे। कितने सेन्टर्स हैं। लाखों सेन्टर्स हो जावेंगे। सारे भारत में खुलते जावेंगे। पाप-आत्मा से पुण्यात्मा बनना यह है तुम्हारा एमआबजेक्ट। पढ़ाने वाला एक शिव बाबा है। वह है नालेजफुल ज्ञान का सागर, सुख का सागर। बाप ही आकर पढ़ाते हैं। यह नहीं पढ़ाते। इनमें आकर वह पढ़ाते हैं। इनको कहा जाता है भगवान का रथ। तुमको कितना पदमपदम भाग्यशाली बनाते हैं। तुम बहुत साहुकार बनते हो। कब

भी बिमार नहीं पड़ते। हेल्थ वेल्थ हैपीनेस सभी मिल जाता है। यहां भल धन है परन्तु बिमारी आदि है तो वह हैपीनेस रह न सके। कुछ न कुछ दुख होता रहता है। उनका तो नाम ही है सुखधाम। स्वर्ग पैराडाईज। इन ल०ना० को यहराज्य किसने दिया यह कोई भी नहीं जानते। यह भारत में रहते थे। विश्व के मालिक थे। कोई पार्टीशन आदि न था। अभी तो कितनी पार्टीशन है। रावण राज्य है ना। कितने टूकड़े2 हो गये हैं। लड़ते रहते हैं। वहां तो सारे भारत मे इन देवताओं का ही राज्य था। वहां वजीर आदि होते ही नहीं। यहां तो वजीर देखो कितने हैं। क्योंकि बेअल है। तो वजीर भी ऐसे ही तमोप्रधान पतित हैं। पतित को पतित मिले कर के लम्बी हाथ। कंगाल बनते जाते हैं। कर्जा उठाते जाते हैं। सतयुग में अनाज़ सभी फ्री होती हैं। अभी धरती पुरानी है तो फल भी ऐसे ही मिलता है। सतयुग मे तो अनाज फल आदि बहुत ही स्वादिष्ट होते हैं। तुम वहां जाकर सभी अनुभव कर आते हो। सूक्ष्मवतन में भी जाते हो तो स्वर्ग में भी जाते हो। तो बाप बैठसमझाते हैं यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। पहले भारत में एक ही आदि सनातन देवी देवता धर्म था। दूसरा कोई धर्म था नहीं। फिर द्वापर में रावण राज्य शुरू होता है। अभी है विकारी दुनिया। फिर तुम पवित्र बन निर्विकारी देवता बनते हो। यहस्कूल है। भगवानुवाच मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूं। तुम भविष्य में यह बनेंगे। राजाई कब पढ़ाई से नहीं मिलती है। बाप ही पढ़ाकर नई दुनिया की राजधानी देते हैं। वह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी हैं। सुप्रीम फादर सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सद्गुरु एक ही शिव बाबा है। बाबा माना जरूर वरसा मिलना चाहिए। भगवान जरूर स्वर्ग का ही वरसा देंगे। रावण जिसको हर वर्ष जलाते हैं सह है भारत का नम्बरवन दुश्मन। रावण ने कैसा अपुर बना दिया है। इनका राज्य 2500वर्ष चलता है। तो बाप समझाते हैं मैं तुम बच्चों को सुखधाम का मालिक बनाता हूं। रावण तुमको दुःखधाम मे ले जाता है। तुम्हारी आयु कम हो जाती है। अचानक ही अकाले मृत्यु हो जाती। अनेक बिमारियां आदि होती रहती हैं। वहां ऐसी कोई बात नहीं होती। नाम ही है स्वर्ग। अभी अपन को कहलाते भी हैं हिन्दु। क्योंकि पतित है तो देवता कहलाने लायक नहीं हैं। बाप इस रथ द्वारा बैठ समझाते हैं। इनके बाजु में आकर बैठते हैं तुमको पढ़ाने। यह भी पढ़ते हैं। हम सभी स्टुडन्ट्स हैं। बाप एकही टीचर है। अभी बाप पढ़ाते हैं फिर 5000वर्ष बाद आकर पढ़ावेंगे। यह पढ़ाई, यह ज्ञान फिर गुम हो जाता है। पढ़कर तुम देवता बने। 2500वर्ष सुख का वरसा लिया फिर है दुःख। रावण का सराप। अभी भारत बहुत दुःखी है। यह है दुःखधाम। पुकारते भी हैं हे पतित-पावन आओ। आकर पावन बनाओ। तुम्हारे में अभी कोई भी विकार न होना चाहिए। परन्तु आधा कल्प की बिमारी कोई जल्दीथोड़े ही निकलती है। उस पढ़ाई में भी जो अच्छी रीत नहीं पढ़ते हैं वह फेल होते हैं। जो पास विथ आनर होते हैं वह तो स्कालरशिप लेते हैं। तुम्हारे में भी जो अच्छी रीत पवित्र बन और फिर दूसरों को बनाते हैं तो यह प्राईज(ल०ना०) लेते हैं। माला होती है ना आठ की माला है पास विथ ऑनर। फिर 108 की। प्राईज इनको मिलती है जो पहले2 आठ में आते हैं। जिनकी माला ही सिमरी जाती है। वह थोड़ेहो इनका रहस्य समझते हैं। माला में ऊपर है फूल। फिर होते हैं दाने मुख। स्त्री और पुरुष दोनों ही पवित्र बनते हैं। यह चित्र पवित्र थे ना। स्वर्गवासी कहलाते थे। यही आत्मा फिर पुनर्जन्म लेते2 अभी पतित बन गये हैं। फिर यही पवित्र बन पावन दुनिया में जावेंगे। फिर से ऐसा बनना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीटहोती है। विकारी राजाएं निर्विकारी राजाओं के मंदिर में आकर उन्हीं को पूजते हैं। वही पूज्य से फिर पुजारी बन गये हैं। विकारी बननसे फिर वह लाईट का ताज भी नहीं रहता। पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। यह खेल बना हुआ है। यह है बेहद का वन्डर फुल ड्रामा। बेहद का ड्रामा है। पहले एक ही धर्म है जिसको रामराज्य कहा जाता है फिर और और धर्म वाले आते हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है सो एक ही बाप समझा सकते हैं। भगवान तो एक ही है। तुमको भगवान पढ़ाकर यह बनाते हैं। यह है तुम्हारा एमआबजेक्ट। और सभी जगह मनुष्य पढ़ाते हैं। कितने ढेर सतसंग आदि होते हैं। कथाएं बैठसुनाते हैं। वह

है झूठी कथाएं। शास्त्र भी सभी झूठे। वह सुनते2 तुमको नीचे उतरना ही हैं। भक्ति से तुम नीचे ही गिरे हो। भक्ति से जब दुर्गति होती है तब फिर भगवान आकर सदगति देते हैं। अभी भारत बिल्कुल ही गिरा हुआ है। कितना गंद लगा पड़ा है। कितने जेलस हैं। कितने खून रेजी आदि होते हैं। यह है ही दुःखधाम। सतयुग को कहा जाता है सुखधाम। पावन। फिर विषस पतित बनने से बेसमझ बन गये हैं। भारत का कैरेक्टर बिगरा हुआ है। क्योंकि विषस हैं। भारत पवित्र था तो कैरेक्टर्स बहुत ही अच्छे थे। अभी पवित्रता नहीं हैं। तो दुःख ही दुःख है। यह चक्र फिरता रहता है। यह ज्ञान भी अभी तुम ही सुनते हो वहांपर भूल जावेंगे। फिर जब बाप आवेंगे तब ही यह ज्ञान मिलेंगे। तुम बेहद के सारे विश्व के मालिक बन जाते हो। वहां मरने का नाम नहीं होता। आत्मा खुशी से एक शरीर छोड़कर जाकर दूसरा लेती है। आत्मा को ही पार्ट मिला हुआ है। जैसे= जैसे एक्टर्स को पार्ट मिलता है। शुरु से लेकर अन्त तक तुम्हारा पार्ट है। यह भी बेहद का ड्रामा है। यह समझने से ही तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। अभी तो दुःख की दुनिया है ना। आत्माएं आती रहती हैं। झाड़ की वृधि होती रहती है। पीछे वाली आत्माएं आती हैं दुःखधाम में। यह भी ड्रामा बना हुआ है। जो ज्ञान नहीं लेते हैं वह पीछे दुःखधाम में आते हैं। मनुष्य को पहले सुख पीछे दुःख होता है। नया सो फिर पुराना होता है। यह है बेहद की बात। बाप नई दुनिया स्वर्ग बना रहे हैं। अभी तुम स्वर्ग के लिये पढ़ रहे हो। राजधानी स्थापन होती है। तो नम्बरवार पास होते हैं। या तो राजा बनेंगे या तो प्रजा। नहीं तो यह सतयुग कहां से आई। यह राजधानी स्थापन होती ही है संगम पर। कलियुग है पुरानी दुनिया। बाप आकर पुरानी को नई बनाते हैं। नई दुनिया में विकार नहीं होता। इसलिये 5भूतों को अभी निकालना है। इसमें ही मेहनत लगती है। बाप को याद न करने से फिर भूत भी पकड़ लेते हैं। बाप को याद करने से ही पाप भस्म होंगे। फिर अभी पाप न करना है। परन्तु माया ऐसी है जो पाप करा देती है। इसलिये सावधानी दी जाती है। नम्बरवार पढ़ते हैं ना। जो अच्छी रीत खुद पढ़ते हैं वह दूसरों को भी पढ़ाते हैं। बाप सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सद्गुरु भी है। सभी को साथ में ले जावेंगे। एक धर्म की स्थापना हो जावेगी। यहां शास्त्र आदि सभी भूल जानी है। पवित्र भी बनना है। वहां कोई विकार नहीं होता। है ही मोहजीत। अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। रावण होता नहीं। योगबल से पहले सा० होता है अभी हम यह पुराना शरीर छोड़ गर्भ महल में जावेंगे। यहां तो गर्भ जेल में भी सज़ाएं खानी पड़ती हैं। फिर शारीरिक कर्म-भोग= भोग भी भोगना पड़ता है। वहां कर्म विकर्म होता ही नहीं। छी छी कर्म होते ही नहीं। यहां तो 5विकार है ना। बाप ही आकर 5भूत निकालते हैं। आधा कल्प का यह भूत बड़ा ही मुश्किल निकलते हैं। इस पढ़ाई में बहुत मजा है। दिल में समझते हैं हम अभी बाप के बने हैं फिर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। परन्तु हमारे से कोई भी विकार न होना चाहिए। अगर विकार होगा तो सजा भी खानी पड़ेगी। और पद भी भ्रष्ट होगा। विकारी बनते हैं तो फौरन लिखते हैं बाबा हम गिर गये अभी रहम करो। बाप कहेंगे जो कुछ भी किया वह सारी कमाई चट हो गई। फिर नई सिरे मेहनत करनीपड़े। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। मेहनत है। कायदे भी हैं। शादी भी भल करे परन्तु पवित्र रहने से विश्व की बादशाही मिलती है। तो क्यों नहीं एक जन्म लिये पवित्र बनेंगे। यह पतित दुनिया ही खत्म हो जाती है। फिर यह तो प्रश्न उठ नहीं सकता कि दुनिया कैसे चलेगी। अरे इतने यह 400करोड़ मनुष्य भी खलास हो जावेंगे। सिर्फ छोटा भारत ही होगा। यह समझने की बात है। तुम बच्चे अभी नालेजफुल बन रहे हो। बाप ही बनावेंगे ना। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो। बच्चे को कोई घड़ी2 कहना नहीं होता है। आपे ही बच्चे हिर जाते हैं। यह बाप भी कहते हैं घड़ी2 मुझे कहना थोड़ेही है। परन्तु माया का आपोजीशन बहुत है इसलिये कहता हूं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बच्चों को श्रीमत मिलती है। श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनेंगे। वह बाप ही बैठ पढ़ाते हैं। फिर भी बाप कहते हैं याद करो। बाप को भूलो मत। इसमें बन्धन तो कोई है नहीं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

*-:*****:-*